

* सन्-१३९५ साल, शार्के १९०९-१० मस्यत्त २०४४-४५ अंग्रेजी १९८७-८८ ई० *

(मिथिला देशीय मकरन्दानुसारि)

श्री महावीर पंचांगम्

प्रकाशक-बालू रघुवर सिंह बुक्सलेजर, मधुबनी (बिहार)
कार्य निरूपक-
बालू रघुवर सिंह



विश्वनाथ-वर्णन
शर्मा-वर्णन
शर्मा-वर्णन
शर्मा-वर्णन
शर्मा-वर्णन
शर्मा-वर्णन
शर्मा-वर्णन
शर्मा-वर्णन
शर्मा-वर्णन
शर्मा-वर्णन

पुनः-प्रकाशन-विश्वनाथ सिंह द्वारा विनियोग वि० वी०, मधुबनी के मुद्रित।

प्रकाशक-बालू रघुवर सिंह बुक्सलेजर, मधुबनी (बिहार)



शर्मा-वर्णन-१३

पुनः-प्रकाशन-विश्वनाथ सिंह द्वारा विनियोग वि० वी०, मधुबनी के मुद्रित।
प्रकाशक-बालू रघुवर सिंह बुक्सलेजर, मधुबनी (बिहार)
कार्य निरूपक-
बालू रघुवर सिंह



अथ वर्षफल लिखते ॥ तत्र सन् १३९५ साल, शके १९०६-१०
संवत् २०४४-४५, प्रमवाद्यो यताब्द दयः १३:८।७।२६।१७॥ सोम्याब्दा-
दयः ४६।३।२०।३०।४३॥ नन्दाब्दनेदुमिते १९०६, शकाब्दे वाहस्पत्ये
श्रावणशतिकायां इन्द्राधिदेवतपुमे चतुर्दश विक्रमनामा वर्षफलम् —जायते
सर्वाशस्याना मेदिन्या धनुःप्रवः । मधु मघ धृत चौब महर्षा विक्रमे द्विमे ॥
वर्षे चन्द्र फलम् —वृक्षाः सद्भलता प्रयान्ति विविधाः स्कीता रूकेमेदिनी
गावः क्षीयुता द्वित्रा बहुधने दमस्तचितोद्धताः । शस्यानां च विषदं न
जलमय शीताशु वर्षाधिपे रोमाना च विनाशनं नरवति दीर्घायुतावच्छले ॥
सम्बाहक गुरु फलम् मेघोऽनेकजलं दशति बहुशो विप्राः सदा सुखिपरा
पृथ्वी शरूय समायुता च नित्यं लोकाः प्रमोदाकुताः । राजा नः सविशेष-
कार निरताः प्रोदत मोदाकुताः कन्दर्पाति कथाप्रवृत्तिः मतसः सम्बाहके
चाद गुरो । पालक शानि फलम् —पृथ्वी शस्य समूह पात विहिता यथा
सिद्धिमेवा यान्ति च तावत् जलकृता योगेन पुनः नराः । सर्वव्यकुलिता
हता उपहता श्वोरैर्गहोतायीकाः गोस्त्री गर्भ विनाशनं भवति धी मुर्धात्मजे
पालके । मेघाधिप सूर्यफलम् —तय हीनाः सदा मेघाः स्वतःशस्या मही
रथी । तोताधिप चन्द्र फलम् तय संप युता चन्द्रे शस्य संधा युता मही ।
शस्याधिप शानि फलम् जनो शस्याधिपे शस्य नाशस्तोय विशीपणम् ।
दुर्गोऽनेकुलिता वृक्षोऽस्त्री गर्भ विन शनम् । लोकाधिप शानि फलम् —
कुजे कुलीनः क्रूराः कुस्तिताश्च कुट्टिताः । उग्र घर्भे श्वोर हीना
नित्यास्तब्रमता नराः श्रेणनामा मेघ फलम् —श्वोरौ शोऽकरो लोक जलदा
भूरिगोघताः । हीना उपचय शानि शस्य भवति दुर्लभम् । घट पर्वत
मत रोहिणी फलम् —भवति सा शानि कामकलापनाऽचलमता जलदा न
मता तदा ॥ इति ॥

सन् १३९५ वर्षेय शुद्धाशुद्धो लिखते

तत्र मुगुली गवास्त बाल्यदोषभयः यावत् कृष्ण प्रतिपद दितः यास्मिन्
शुक्ल चतुर्दश्यां कुजे दण्डादि ५३।४८ यावत् शुद्धस्तशामुद्धान मासादिः
२।२६।५३।४८ तः १० कृष्णोद्दारायां बुधे द० २४।२ यावत् शुद्धः तत्र
शुद्ध मासम्, मासादिः २।१०।३०।१४ ततो धनुःपक्षे दोषनाय कृष्ण
दशम्यां गुरो द० ४६।७ यावत् शुद्धस्तशामुद्धान मासादिः १।२६।२५।५
ततो वैशाख कृष्ण द्वितीयायां चन्द्रे द० २४।५ यावत् शुद्धः तत्र शुद्ध मास
मासादिः २।२०।३०।५८ ततो गुरु शुक्लोः क्षीरायास्तबाल्य दोषेभ्यो
द्वितीय वदेष्ट मासस्यायां गुरो द० ४७।४ यावत् शुद्धस्तशामुद्धान मास दि
२।११।३३।४३ तत्र धापादो यावत् शुद्ध मास मासादिः १।१४।२।
१२ तत्राव वरौ समुद्धान मासादिः ६।७।४६।३६ शुद्धान मास दिः
६।१६।१०।२४ द्वयोर्गो वर्षांशुति मासादिः १२।२४।००।०० वर्षांशुति
दिवानि ३८४ ॥ इति ॥

अथ लोक व्यवहारार्थं विश्वा लिखते

वर्षा ७ धातय १३ शीत ५ गृष्म ६ उष्ण ११ ग्रासु १३ प्रजापुष्टि
१५ प्रजाशय १५ विरह ११ लघु १३ तुलना १३ निद्रा ७ शान्तय १३
उद्यम ७ शान्ति ११ क्रोध ३ वषट् ३ भोजी १ उन्माद १३ पाप ७ पुण्य ११
रसादि ६ ॥ उपत्य १६ रसोत्पत्ति १३ फलोत्पत्ति १३ रोग ७ रोगशय १७
धापाद १३ व्यवहार १५ मरण ६ जवन १५ और १६ औरीय शयन ५
प्रतिपद ६ शान्तय १७ ॥

मेवादिद्वादश राशीनां सफ उमायव्य बोधकचक्रम्

राशिः	मेघ	गुरु	शुक्र	तुल	मिथुन	कन्या	कर्क	सिंह	प्रभु	मीन	मकर	गुरु
धातयः	१४	८	११	५	८	२	५					
व्यवः	१२	११	८	८	२	११	५					
फलम्	विजय	शोच्य	सोच्य	रोग	साध	रोग	साध					

सन् १३९५ साल में शुद्ध समय

यास्मिन् शुक्ल १४ मंगल रौ पीप कृष्ण १० मंगल तत्र धातय कृष्ण
१० नृक्षयति रौ वैशाख कृष्ण १ रवि तत्र, तथा द्वि वदेष्ट कृष्ण ३०
मंगल रौ धापाद पर्वत शुद्ध भद्रि ॥

[illegible]

+खरावे बापे तन्मेजुष वषगपुतः पापखेदो वास्स्यो स्थानं यस्या जनन सत्ये सा
 कुमारी विषाख्या घ्रादित्यसूतोदितसे द्वितीया भुजङ्गमे भोग दिनेम्बजुषसे बेसत्त
 मोषाव रवोविषाखा हरेस्तितीवापि च सावित्राधरा ॥ धर्मोहे गते भोगे तन्मे च
 रविनन्दने । पञ्चमे दिवसाधीने सा विषाख कुमारिका ॥ विषाखा शोकसन्तप्त
 दुग्धया मृत्युपुत्रिका । वस्तारभरणहीनश्च पुराणे क्वलिता बुधे ॥ अथराज योत्क
 एक राजी च दम्पत्योः गुप्तस्यात्सम्पत्तये । चतुर्थेदामने चैत्र ततोर्धिका वावरे तथा
 एक यावत् पापप्रहर् कन्यायायेप्रमराहृन्विनो भवेत्तावामे ततोर्धिका वा वारस्यापि
 कुण्डलार्थ इत्यादि गुप्तदो वाक्यः नात्यथा । कन्यायाः सप्तमबावनाये गुप्तादि-
 तोम्यपहाराणां गुप्तस्थानस्थित्यादिना सोभाभ्ययोनेश्चापिबिलोक्य इति ॥

१ विवाहे वणगुणाः । वरः

शुद्धः	वैश्यः	क्षत्रियः	ब्राह्मणः
१	१	१	१
१	१	१	१
१	१	१	१

२ वैदयगुणाः चरः

[illegible]

नृहरदोष परिहारः—

रादौ के नोद्विजगुत्वं द्वयोः स्यात्-
 च्छत्रक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ।
 तथाहि निजकं रात्रौ कं भिन्नां प्रक-
 र्त्तं गण्यत्वात् नात्रो नन्दुरं न च

६ गणगुणाः । चरः

रु. मा. रा.	रु.	मा.	रा.
०	६	६	०
०	६	६	०
६	०	०	६

4

[illegible]

0	4
5	6

०	९	८
९	९	०
९	०	०
०	०	९
०	९	०

नोद्दिगुणाः । वरः

आदि	०	८	८
माया	८	०	८
अन्त्य	८	०	८

161

[illegible]

३३३

[illegible]

तथा ३ गुणाः ।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

三〇

५ एहं भोग्यगुणः परः

$$K =$$

一
 二
 三
 四
 五
 六
 七
 八
 九
 十

४ योनिगुणाः । वर

[illegible]

01

1	0	0	0	0	0
2	0	0	0	0	0
3	0	0	0	0	0
4	0	0	0	0	0
5	0	0	0	0	0
6	0	0	0	0	0
7	0	0	0	0	0
8	0	0	0	0	0
9	0	0	0	0	0
10	0	0	0	0	0
11	0	0	0	0	0
12	0	0	0	0	0
13	0	0	0	0	0
14	0	0	0	0	0
15	0	0	0	0	0
16	0	0	0	0	0
17	0	0	0	0	0
18	0	0	0	0	0
19	0	0	0	0	0
20	0	0	0	0	0
21	0	0	0	0	0
22	0	0	0	0	0
23	0	0	0	0	0
24	0	0	0	0	0
25	0	0	0	0	0
26	0	0	0	0	0
27	0	0	0	0	0
28	0	0	0	0	0
29	0	0	0	0	0
30	0	0	0	0	0
31	0	0	0	0	0
32	0	0	0	0	0
33	0	0	0	0	0
34	0	0	0	0	0
35	0	0	0	0	0
36	0	0	0	0	0
37	0	0	0	0	0
38	0	0	0	0	0
39	0	0	0	0	0
40	0	0	0	0	0
41	0	0	0	0	0
42	0	0	0	0	0
43	0	0	0	0	0
44	0	0	0	0	0
45	0	0	0	0	0
46	0	0	0	0	0
47	0	0	0	0	0
48	0	0	0	0	0
49	0	0	0	0	0
50	0	0	0	0	0
51	0	0	0	0	0
52	0	0	0	0	0
53	0	0	0	0	0
54	0	0	0	0	0
55	0	0	0	0	0
56	0	0	0	0	0
57	0	0	0	0	0
58	0	0	0	0	0
59	0	0	0	0	0
60	0	0	0	0	0
61	0	0	0	0	0
62	0	0	0	0	0
63	0	0	0	0	0
64	0	0	0	0	0
65	0	0	0	0	0
66	0	0	0	0	0
67	0	0	0	0	0
68	0	0	0	0	0
69	0	0	0	0	0
70	0	0	0	0	0
71	0	0	0	0	0
72	0	0	0	0	0
73	0	0	0	0	0
74	0	0	0	0	0
75	0	0	0	0	0
76	0	0	0	0	0
77	0	0	0	0	0
78	0	0	0	0	0
79	0	0	0	0	0
80	0	0	0	0	0
81	0	0	0	0	0
82	0	0	0	0	0
83	0	0	0	0	0
84	0	0	0	0	0
85	0	0	0	0	0
86	0	0	0	0	0
87	0	0	0	0	0
88	0	0	0	0	0
89	0	0	0	0	0
90	0	0	0	0	0
91	0	0	0	0	0
92	0	0	0	0	0
93	0	0	0	0	0
94	0	0	0	0	0
95	0	0	0	0	0
96	0	0	0	0	0
97	0	0	0	0	0
98	0	0	0	0	0
99	0	0	0	0	0
100	0	0	0	0	0

9	1
9	1

१ ० २ ३ ४
५ ६ ७ ८ ९

वसनाभावे तथाऽन्येषां तादाशुद्धौ परम्पराम् ।
विपरीतदा कलाहमः नूनः ॥

[illegible][illegible]

卷一

[illegible]

10

मानान्न जल मे लोकोदक कानने को दीति-
 श्वा मन्त्र मे जलमात्र एव हिं 'व' अक्षरान्न मे
 नमुत्तम जल मे लिखकर श्री गोविन्द नमुत्तम

(2) $\frac{1}{2}$

॥ १ ॥
 ॥ २ ॥
 ॥ ३ ॥
 ॥ ४ ॥
 ॥ ५ ॥
 ॥ ६ ॥
 ॥ ७ ॥
 ॥ ८ ॥
 ॥ ९ ॥
 ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥
 ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥
 ॥ १४ ॥
 ॥ १५ ॥
 ॥ १६ ॥
 ॥ १७ ॥
 ॥ १८ ॥
 ॥ १९ ॥
 ॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥
 ॥ २३ ॥
 ॥ २४ ॥
 ॥ २५ ॥
 ॥ २६ ॥
 ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥
 ॥ २९ ॥
 ॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥
 ॥ ३२ ॥
 ॥ ३३ ॥
 ॥ ३४ ॥
 ॥ ३५ ॥
 ॥ ३६ ॥
 ॥ ३७ ॥
 ॥ ३८ ॥
 ॥ ३९ ॥
 ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥
 ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥
 ॥ ४४ ॥
 ॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥
 ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥
 ॥ ४९ ॥
 ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥
 ॥ ५५ ॥
 ॥ ५६ ॥
 ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥
 ॥ ५९ ॥
 ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥
 ॥ ६२ ॥
 ॥ ६३ ॥
 ॥ ६४ ॥
 ॥ ६५ ॥
 ॥ ६६ ॥
 ॥ ६७ ॥
 ॥ ६८ ॥
 ॥ ६९ ॥
 ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥
 ॥ ७२ ॥
 ॥ ७३ ॥
 ॥ ७४ ॥
 ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥
 ॥ ७७ ॥
 ॥ ७८ ॥
 ॥ ७९ ॥
 ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥
 ॥ ८२ ॥
 ॥ ८३ ॥
 ॥ ८४ ॥
 ॥ ८५ ॥
 ॥ ८६ ॥
 ॥ ८७ ॥
 ॥ ८८ ॥
 ॥ ८९ ॥
 ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥
 ॥ ९२ ॥
 ॥ ९३ ॥
 ॥ ९४ ॥
 ॥ ९५ ॥
 ॥ ९६ ॥
 ॥ ९७ ॥
 ॥ ९८ ॥
 ॥ ९९ ॥
 ॥ १०० ॥

2416

[illegible]

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

मं प्रतीति कदाचि न विनायक "उम कट्ट"

1

मयः धेनु, मत्स्य कुर्म जीर
तु ये सामान्यजल तीर्थोदक

1997

इस मन्त्र से श्रीकुम्भरा के
कर अल में स्थापित करे। पुन
जादित कर मूलमन्त्र दशबार

1992

+ सन्निधि
तीर्थ का आय
शंख मुद्रा से
हो जायगा।

॥ सूर्यादिचारं सिद्धधात्र्योना चक्रम् ॥

(3)

[illegible]

✽ नारायणकृत ✽

| जन्म | सम्पन्न | विपन्न | शुभ | प्रत्यरि | साधक | वध | मित्र | अतिमि | तार |
|------|---------|--------|-----|----------|------|-------|-------|-------|---------|
| २ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | नक्षत्र |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | नक्षत्र |
| १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | नक्षत्र |
| मध्य | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | शुभ | फल |
| आक | • | गुह | • | सवर्ण | • | सवर्ण | • | • | दान |

‘घनदा मुखदा चैव मृत्युदा चैव पञ्चनः ।’

[illegible]

ग्रह सतोपाधधारण पदार्थः—

| | | | | |
|----------------------|----------|----------------------|------------------------|------|
| रत्न | धातु | मणि | औषधि | पहा. |
| माणिक्य | विद्रुम | काजा
(लज्जती मूल) | अर्क (मदार) | स. |
| मुष्काफल
(मोची) | रोष्य | वृद्ध | पलाश | चं. |
| प्रवाल (मृगा) | विद्रुम | बला (बरियार) | खदिर | मं. |
| पद्मा | मुष्काफल | मोधा | अप (भायं
चिरविरी) | प |
| पुष्पराग
(पोलराज) | सुवर्ण | परपो
दस्वी | पोष्पल | ह |
| वज्रमणि (होरा) | रोष्य | वाक हल्दी | श्रीकुम्भर
(भस्मरि) | शु |
| नीलम | कोह | शमी | शमी (शजि) | श |
| गोमेध | काजबरी | सहूरफाका मूला | पुर्वा मूल | रा |
| केरस
कादरिया | काजचर्त | कोष | कुलमूला | के |

॥ सुखादि ९ महाक यन्त्र ॥

| सूच्य | चन्द्र | मंगल | बुध | शुक्र | शुक्र |
|---|--------|------|---|-------|-------|
| ६ १ ८ ७ २ ९ ८ ३ १० ९ ४ ११ १० ५ १२ ११ ६ १३ | | | | | |
| ७ ५ ३ ८ ६ ४ ९ ७ ५ १० ८ ६ ११ ९ ७ १२ १० ८ | | | | | |
| २ ९ ४ ३ १० ५ ४ ११ ६ ५ १२ ७ ६ १३ ८ ७ १४ ९ | | | | | |
| शनि | राहु | केतु | भोजपत्र पर सोनाक्षरवाच्य बन्ग्या
पुष्पक लेखनी सैं कमराः रक्तचन्दन
गोरोचन, कस्तूरी, गोमूत्र, धो
कस्तूरी सैं तिलवाक बाही । | | |
| १२ ७ १४ १३ ८ १५ १४ ९ १६ | | | | | |
| १३ ११ ९ १४ १२ १० १५ १३ ११ | | | | | |
| ८ ५ १० ९ १६ ११ १० १० १२ | | | | | |

(५)

॥ गोचर चक्रमिदं जन्मराशिना नामराशिना वा पथनीयम् ॥

| राशिः | चन्द्रः | कुजः | शुक्रः | गुरुः | शनिः | राहुः | केतुः |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| सुर्यः | अश्विः | अश्विः | अश्विः | अश्विः | अश्विः | अश्विः | अश्विः |
| चन्द्रः | चन्द्रः | चन्द्रः | चन्द्रः | चन्द्रः | चन्द्रः | चन्द्रः | चन्द्रः |
| कुजः | कुजः | कुजः | कुजः | कुजः | कुजः | कुजः | कुजः |
| शुक्रः | शुक्रः | शुक्रः | शुक्रः | शुक्रः | शुक्रः | शुक्रः | शुक्रः |
| गुरुः | गुरुः | गुरुः | गुरुः | गुरुः | गुरुः | गुरुः | गुरुः |
| शनिः | शनिः | शनिः | शनिः | शनिः | शनिः | शनिः | शनिः |
| राहुः | राहुः | राहुः | राहुः | राहुः | राहुः | राहुः | राहुः |
| केतुः | केतुः | केतुः | केतुः | केतुः | केतुः | केतुः | केतुः |

॥ दिक्मणि पञ्चम संज्ञकाः ॥
॥ १२५७८९१०१११२ ॥
॥ १३१४१५१६१७१८१९२० ॥
॥ २१२२२३२४२५२६२७२८ ॥
॥ २९३०३१३२३३३४३५३६ ॥
॥ ३७३८३९४०४१४२४३४४४५ ॥
॥ ४७४८४९५०५१५२५३५४५५ ॥
॥ ५७५८५९६०६१६२६३६४६५ ॥
॥ ६७६८६९७०७१७२७३७४७५ ॥
॥ ७७७८७९८०८१८२८३८४८५ ॥
॥ ८७८८८९९०९१९२९३९४९५ ॥
॥ ९७९८९९०९१९२९३९४९५ ॥

॥ अथ ज्ञेयं कलीमन्त्रे फलीमन्त्रम् ॥

| स्थानम् | फलम् | स्थानम् | फलम् |
|---------|---------|---------|---------|
| राशिः | राशिः | राशिः | राशिः |
| चन्द्रः | चन्द्रः | चन्द्रः | चन्द्रः |
| कुजः | कुजः | कुजः | कुजः |
| शुक्रः | शुक्रः | शुक्रः | शुक्रः |
| गुरुः | गुरुः | गुरुः | गुरुः |
| शनिः | शनिः | शनिः | शनिः |
| राहुः | राहुः | राहुः | राहुः |
| केतुः | केतुः | केतुः | केतुः |

॥ द्वाविंश चक्रम् ॥

| राशिः | चन्द्रः | कुजः | शुक्रः | गुरुः | शनिः | राहुः | केतुः |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| सुर्यः | अश्विः | अश्विः | अश्विः | अश्विः | अश्विः | अश्विः | अश्विः |
| चन्द्रः | चन्द्रः | चन्द्रः | चन्द्रः | चन्द्रः | चन्द्रः | चन्द्रः | चन्द्रः |
| कुजः | कुजः | कुजः | कुजः | कुजः | कुजः | कुजः | कुजः |
| शुक्रः | शुक्रः | शुक्रः | शुक्रः | शुक्रः | शुक्रः | शुक्रः | शुक्रः |
| गुरुः | गुरुः | गुरुः | गुरुः | गुरुः | गुरुः | गुरुः | गुरुः |
| शनिः | शनिः | शनिः | शनिः | शनिः | शनिः | शनिः | शनिः |
| राहुः | राहुः | राहुः | राहुः | राहुः | राहुः | राहुः | राहुः |
| केतुः | केतुः | केतुः | केतुः | केतुः | केतुः | केतुः | केतुः |

॥ अथ यज्ञोपवीत धारणमन्त्रः ॥

वाजस०—ॐ यज्ञोपवीतं पञ्च पवित्रं प्रजापते यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेवः ॥
छन्दोगानु—ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्यत्वोपवीतेनोपनह्यामिः ।
यज्ञोपवीतत्यागमन्त्र—एतावद्दिनं पयन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया ।
वीर्णोवाल्परित्यागो गच्छ सूत्रं यथासुखम् ॥

संज्ञ. स. क. पुष्पा. मूल. छात्रा, नक्षत्रे पुर म. म. दिने ।

जन्ममासे त्यज्य विषया—क्षीरकर्म, दीर्घारत्रा, कण्विधेः ।

विवाहं विहितं मुहूर्तं

दे. उक्त. उमा. उमा. रो. मृ. म. धनु. ह. मृ. स्त्री वांस्वर्य मृदुत्व
प्रथमकाष्ठे तुल्यकातिकका ६ मूत्रे धान्ति. एव एतेषु पञ्चमेनाका जनिते
निगद्यन् शोते । हरिश्चयन औज रहित वीरकर्म माध दिनमासेषु माधमासेषु
तृषिणिक, मकर,शेष राशिषे मूर्त कर्मण कातिक षोण औजमासेऽपि । क्रम्या
मूत्रे, मित्रन लग्न मृ. रहित निवे ४४६७८९ रहित त्रिवो ज्येष्ठयोः
मध्यमः विज्येष्ठः ज्येष्ठः राहितः ज्येष्ठः राहितः ज्येष्ठः राहितः ज्येष्ठः राहितः

बहुपदेन महत्तं

पुष्प मृ. रे. शिवा, धनु. अ. घनि. मु. मं. स्वा. नक्षत्र पु० १६।३।३०
रहित तिथी र. म. बु. रहित रात्रौ ४५।३।३० ७२।३।३० ९८।३।३० विषा
द्रादेतत् सप्तमक दिने मलमास तथा सोढक्रमे षोड, जैष्ठ रहित मासेषु ।

द्विरागमन मुहूर्त

द्वितीयगमनं सन्नेन श्वत्थमतेषु प्रथमं वर्षं यावत् शुक्र रोहो विषाख,
नक्षत्रं च; तृतीयादि विषम वर्षेषु केवलं शुक्र विषाखो विषेयः तृतीयादि
विषम वर्षेषु द्विरागमनः २ शुक्ररोहोः क्षीयति चात्यन्तमुष्णं धेनु रे. पश्चि.
रो. मृ. नक्षत्रेषु शुभं विषम वर्षेभ्य द्विरागमनः गर्भवत्या स्तिर्वागमो
यावात्पिप्लुमया यस्तु मोक्षवतात् काश्यपे वसिष्ठ्य चित्रम्बागमनुव-
पारद्वाये प्रतिकुला ननुला ने रे. पुष्य. पुन. उक. उषा मृ घन, पश्चि ह
चि. स्म. रो. ग. घ. नक्षत्रेषु सौरकेने मार्ग, फाल्गुन, शोभाह पातेषु
१।३।१३। विषम वर्षेषु मंगल गमि रश्मि दिनेषु कर्मां मिशुने मीन मकर
सन्नेषु यात्रोक्तं मृत्योगादि दृष्टदिन रहितं शुभं तिथौ ।

नवद्वया वाकारम्भः

मू. व. ३ पुष्प, क, ज्ये, श्र, रो, वि. रे. १।३ ५।७।१०।११।१३।१५
तिथी मंगल रहित दिने ।

यात्रा मुहूर्त

[illegible]

दीक्षा ग्रहण मुहूर्तः

भाद्रा. उफ. उपा. उषा. रे. म. रो. प्रनु. प्रनि नक्षत्रेषु तीरक्ष्मे
मार्ग. का. था. का. अधिमास शुद्ध श्रित्वाचारात् साठ्योप-देवीषो घनुद-
समयेति च. म. रहित दिने शुभ तिथौ, चन्द्रतारावनुकूल विचक्ष। मन्वादि
पूर्वादि तिथि सूर्यसंक्रान्ती सूर्यग्रहण मन्त्रो ग्रहण शुभ।

नवान्न पार्जन मुहूर्त'

[illegible]

वाणिज्य-सुहृत्

१।२।१४ तिथि मंगल दिनम् कुले च विहाय सन्तु. उक्त. उपा. उभा. व.
मल्लि. पुण्य नक्षत्रेण च शुभ लभते र. म. श. लभन्तु १।२।१४।१५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।
पुष्यशुभे च. व. व. व. १।१।१२।१३।१४।१५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।

वेवादि प्रतिष्ठा

सौरमासे अषाढि ३ मासे शुद्धसमय मृ. रे. वि. मनु, ह, च, पुष्य,
स्वा, श्र, घ, ञ, उफ, उषा, उषा, रो, नक्षत्रेषु फेवल शुक्लपक्ष ४ २१४
इति तिथी श्रावण मणि दत्तित दिने चन्द्रारानुक्त यत्नारम्भः शुभ ।

वास्तु (गृहारम्भः मुहूर्तः)

[illegible]

गृह प्रवेश मुहूर्त

मने, वि, म प्रक, पूषा, मरुतो रहित नक्षत्रे १.४।६।१०।१६ रहित
विने १, ४, रहित दिनेषु शुद्ध कुम्भ चके यथा— (पूषा)मान नक्षत्रा
६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५।१६।१७ सङ्घक नक्षत्रेषु
शुक्लपत्रेषु, प्रादयपके कुम्भस्वस्थभावात् । यातु विहित मासे शुद्ध समरे यथावि
मूढे शुद्धयमेवि युप विह, युपचक सन्नेषु चन्द्रायानुकूल दिने राशो वा
युह प्रदत्तः शुभः ।

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | | | | | | | | | | | | | | | |

[illegible]

॥ नष्टवस्तुज्ञान यक्रम ॥

| | |
|--|------------------|
| अंधलोचन-रो. पुण्य. ड. फा. बिशा. पू. पा. ध. रे. | शीघ्रतालाभ पूर्व |
| मन्दलोचन-मू. शंखे. ह. अनु. ड. पा. शत. आधि. | ३ दिनेला. हस्ति |
| मायलोचन-आ. भ. बि. ज्ये. अ. पू. भा. म. | पश्चिमे ६४ दिने |
| सुलोचन-पुन. पू. फा. स्वा. मू. अ. उ. भा. क. | अलाभ उत्तर |

सन् १३९५ सालक संक्षेप वर्ण फल

यह विषय नाम का वर्ण है।

इस वर्ण का राजा चन्द्रमा है, मन्त्री बुधराति, पालक जति, वैधाधिप सूर्य।
लोधाधिप चन्द्रमा श्रवणाधिप जति धीर लोकाधिप मन्त्र है, तथा जेण
नामका मेघ धीर परतगत रोगी का वास है। इन दशो कलाधिपार्यों
में केवल विक्रमवर्ष राजा चन्द्रमा, मन्त्री बुध धीर लोधाधिप चन्द्रमा इन
चारों का फल युक्त कारक है, जेप ६ कलाधिकारियों का फल अनुकारक
है, इसलिये इस वर्ण का फल अधिक अनिष्टकारक होगा। अधिक स्थान
में खण्डवृष्टि के कारण उपज की हानि होगी। चौर, रोग, सर्वप्रथम दुःख-
चार तथा दुःखिणादि के कारण प्रजावर्ग में क्षयान्ति रहेगी। राजाघो तथा
प्रजाघो में परस्पर विद्रोह बढ़ेगी, सभी वस्तुओं की तेजी रहेगी, इस वर्ष
में ता० जनवरी १९८८ ई० तक तुल्य, शुक्ल धीर धनु इस तीनों राशि
वालों की हानि की साक्ष्यता रहेगी, इसके बाद ३ जनवरी में शुक्लक,
धनु, धीर मकर राशिवालों की हानि की साक्ष्यता रहेगी, जिसमें विशेष
हानि होगी, इसकी हानि के लिये प्रति शनिवार की दोपहर के सुल में

सन् १३९५ साल का संक्षिप्त मास फल

चार ग्रहों का योग हुआ है, इसलिये इस मास का फल हानिकारक प्रतीत
होता है, मन्त्र, रोग, चौर धीर दुःखिणादि का विशेष भय होगा तथा
किसी देवी दुर्घटना होने की सम्भावना है, राजा तथा प्रजावर्ग में विशेष
विद्रोह के कारण क्षयान्ति रहेगी, अन्नादि खाद्य वस्तुओं तथा सोना चाँदी
इत्यादि धातु वस्तुओं की समता रहेगी, ता० १२ की पूर्वार्ध तक हुआ है
कही २ पर वर्षा होने की सम्भावना है ॥

शनि—इस मास में ता० २४ की पांच ग्रहों का योग हुआ है
इसलिये इस मास का फल भी युक्त मान की धर्मता अधिक भय वायक
होगा, ता० १५ की जति मार्ग धीर ता० १८ की बुधराति वकी हुआ है
अतः कही २ पर खण्डवृष्टि तथा नदियों के बाढ़ के कारण विशेष हानि
होने की सम्भावना है, सभी चीजों की महर्षता रहेगी, राजा तथा प्रजावर्ग
में परस्पर विद्रोह बढ़ने के कारण विशेष क्षयान्ति रहेगी ॥

शनि—इस मास में पांच मंगलवार हुआ है धीर
ता० ६ को बुध का उदय पूर्व दिशा में हुआ है तथा ता० २३ को अशु-
चित्त सूर्योदय हुआ है इसलिये इस मास का भी फल हानिकारक ही
प्रतीत होता है, चौर, रोग, ज्वर, धीर दुःखिणादि का भय अधिक होगा,
सारथी उपज तथा राजा की हानि होगी अन्नादि का भय महर्ष होगा,
ता० २६ को शनिवस बुध का उदय हुआ है इसलिये कही २ पर वर्षा
होने का भी सम्भावना है ॥

शनि—प्रहर्षित के अनुसार इस मास का फल
शुभकारक प्रतीत होता है, अन्नादि का भय सम्भव रहेगा, रत्नादि वस्तुओं
तथा काष्ठदि वस्तुओं की तेजी रहेगी, ता० १४ की पूर्वार्ध भयल हुआ
है धीर ता० २२ का चार ग्रहों का योग हुआ है अतः कही २ पर वर्षा
होने के कारण उपज की हानि होने की सम्भावना है ॥

शनि—इस महीने में पांच शुक्रवार तथा पांच शनिवार हुआ
है तथा इस मास शुक्ल राशि की संक्रान्ति ता० १६ सोमवार की धीर
इस मास की समावर्तना शनिवार का हुई है इन सर्वा कारणों से इस
मास का फल मध्यम रूप का प्रतीत होता है, ता० १५ की मंगल तुल्यराशि
में गया है इसलिये सभी धनाओं की महर्षता होगी, तथा उरीद, मृग, शुभ
धीर कपास की विशेष महर्षता होगी, ता० २२ की जति पश्चिमस्त हुआ
है इसलिये कही २ पर वर्षा होने की सम्भावना है ॥

शनि—इस महीने में पांच रविवार होने के कारण तथा अथा-
वास्या ज्येष्ठा मङ्गल तथा रविवार से युक्त होने के कारण धीर ता० १
जनवरी को धनु राशि में जति का प्रवेश होने के कारण इस मास का फल
भय कारक प्रतीत होता है, रोग, चौर तथा दुःखिणादि का विशेष भय
होगा, राजाघो की हानि होगी, विशेष शिवलता के कारण प्रजा क्षिणित
रहेगी, सभी वस्तुओं की महर्षता रहेगी, अन्नादि की विशेष हानि होगी,
कही २ पर वर्षा तथा भासा के कारण जूत में हानि होने की सम्भावना है

शनि—इस मास में मकर संक्रान्ति शुक्रवार को हुई है तथा
इस मास में पांच सोमवार तथा पांच मंगलवार होने के कारण इस मास फल
मध्यम रूप का प्रतीत होता है, इस मास में दोनों पक्षों में सप्तमी तिथि
सोमवार से युक्त तथा समावर्तना मंगलवार से युक्त होने से राजा तथा
प्रजा में परस्पर विद्रोह होने की सम्भावना है, रोग, चौर, दुःखिणादि का
विशेष भय होगा, शिवलता की विशेषता रहेगी, अन्नादि सभी चीजों की
समता रहेगी, ता० १० की बुध पश्चिम अस्त हुआ है तथा बुध का राशि
संभार हुआ है अतः कही २ पर वर्षा तथा भासा गिरने से उपज की हानि
होने की सम्भावना है ॥

शनि—इस मास में पांच शुक्रवार हुआ है इसलिये
इस मास का फल शुभकारक प्रतीत होता है, अतः इस मास की शुभ
राशि की संक्रान्ति शनिवार ता० १३ को हुई है धीर ता० १६ की धनु
राशिगत जति मंगल का योग हुआ है अतः इस मास में भी पूर्वार्ध की
तरह दुःखिणादि तथा राज विद्रोह होने की सम्भावना है। अन्नादि सभी
वस्तुओं की समता रहेगी, धनु राशि में मंगल की रहने के कारण मङ्गलग्रह
(शनि-मुरई इत्यादि भास-मुसा काष्ठदि भूत कपास तथा धातुवर्षादि की
महर्षी होगी ॥

शनि—इस मास में पांच शुक्रवार हुआ है तथा इस मास की
संक्रान्ति सोमवार को हुई है अतः इस मास का फल उत्तम प्रतीत होता है
सभी चीजों की समता रहेगी, ता० १८ की मङ्गल बुध का पक्ष की प्रतिपदा

तिथि जनिवार से युक्त होने के कारण आगामी समय में वर्षा के अभाव से कृषि में हानि होने की संभावना है, तथा राजाओं में परस्पर विग्रह का भी संभव है ॥

वैशाख—इस मास की मेष राशि की संक्रांति ता० १३ बुधवार जतिमया नक्षत्र में हुई है इसमें इस मासका फल शुभदायक होगा, परन्तु इस महीने में पाँच रविवार हुआ है इस कारण इस महीने में ज्वर-कोषक या दि रोगों का विशेष भय होगा, घन्नादि का भय महती रहेगा, ता० ११ को शनि बकी हुआ है और ता० १६ को बुधपति पश्चिमास्त हुए हैं इस कारण वही २ पर बुध्ति होने का भी संभावना है ॥

प्र. ज्येष्ठ—इस मास में पाँच मंगलवार हुआ है तथा ता० १४ जनिवार को बुध राशि की संक्रांति हुई है इस कारणों से इस मासका फल हानिकारक प्रतीत होता है, इसलिये इस महीने में जल-रोग और दुर्घटनादि का विशेष भय होगा, ता० १५ को शुक बकी हुआ है और ता० २१ को बुधपति पूर्वा उदित हुये हैं अतः वही २ पर बुध्ति पश्यन सुफलादि होने का भी संभावना है। घन्नादि सभी वस्तुओं की समता रहेगी ॥

द्वि. ज्येष्ठ—इस मास में पाँच बुधवार हुआ है तथा ता० २१ को राशि में आइरा नक्षत्र का प्रवेश हुआ है इसलिये इस मासका फल कल्याण कारक प्रतीत होता है। प्रह राशि साँबर के विचार से इस मास में व्यापक वर्षा होने का योग है। घन्नादि का भय साम्य रहेगा, शुक्ल पड़वा तिथि बुधवार से युक्त होने के कारण आगामी वर्ष का फल भय कारक होगा ॥

आमास—इस मास में पाँच गुरुवार तथा पाँच शुकवार हुआ है और इस मास में कृष्णपक्ष तिथि की हानि और शुक्लपक्ष तिथि की वृद्धि हुई है अतः इस मास का फल शुभकारक प्रतीत होता है, परन्तु शुक्लपक्ष की अन्तिम तिथि मंगलवार से युक्त रहने के कारण रोग, और दुर्घटनादि का भय होगा घन्नादि सभी वस्तुओं की समता रहेगी, तथा खण्ड बुध्ति होने की संभावना है।

सन् १३९५ साल का वार्षिक राशिफल

मेघ—घनघान्नादि का लाभ, जल, चौरादि का भय, मानहानि भ्रमण, मानसिक चिन्ता, पारिवारिक विग्रह, कार्य सिद्धि, स्वान घर्मादि की हानि शारीरिक शोथ, वर्षफल लाभकारक तथा विजय अदायक है, इसमें सूर्य, मंगल, शनि और राहु से चारो पह विशेष हानिकारक है।

वृष—शारीरिक शोथ, जल, योगादिक भय, स्त्रीकष्ट, पुत्रादिक चिन्ता, विजय की प्राप्ति, घन्नादि की प्राप्ति, प्रारम्भिक कार्यों की सिद्धि, जल, वन, स्वान तथा मान की हानि, पुत्रादिक प्राप्ति, वर्षफल शोथ कारक है, इसमें सूर्य गुरु शनि और केतु से चारो पह वष्ट तथा जोक कारक है अतः इनचारों की शान्ति शुभदायक होगी ॥

मिथुन—स्वान-मान-घर्मादि की हानि, घनघान्न पुत्रादि की प्राप्ति, पदोन्नति, स्त्रीकष्ट, जल, रोगाग्नि चौरादि का भय। विजय की प्राप्ति, कार्य की सिद्धि, देहकष्ट, अधिक व्यय, विदेश भ्रमण, जल, वन, वर्षफल शोथ कारक है, इसमें राहु और केतु से दोनों तथा माघ से शनि से तीनों पह प्रमुख फल कारक है अतः इन तीनों की शान्ति करानी चाहिये ॥

कर्क—वन्धन भय, घनघान्नपुत्रादि की प्राप्ति, तीर्थ यात्रा, पदोन्नति, पारिवारिक विग्रह, इन्ध लाभ, विजय की प्राप्ति, जल रोग चौरादि का भय, शारीरिक वष्ट, कार्य की सिद्धि, वर्षफल शुभकारक है। इसमें मंगल और राहु से दोनों पह प्रमुखकारक है इसलिये इन दोनों की शान्ति श्रेष्ठकर होगी ॥

सिंह—कार्य सिद्धि, धन, विजय की प्राप्ति, वस्त्र का भय, जल की वृद्धि, इन्ध-पुत्रादि की हानि, रोग चौरादि का भय, घर्मादि-रम्भ, तीर्थयात्रा, मानसिक चिन्ता, शारीरिक मलेन, वर्षफल लाभकारक तथा रोग चौरादि भयकारक है इसमें जनि राहु और केतु से तीनों पह विशेष हानि कारक है अतः इन तीनों की शान्ति करानी चाहिये ॥

कन्या—मनोरथ की पूर्ति, धनादिक लाभ, स्वान हानि, वस्त्रादि का भय, जल की वृद्धि, रोग चौरादि का भय, शारीरिक वष्ट, विदेश भ्रमण, विजय की प्राप्ति, मान की प्राप्ति, मान वित्त प्रोत्सा, वर्षफल शोथ कारक है, इसमें गुरु शनि राहु और केतु से चारो पह प्रमुख है ॥

तुल्य—कार्य सिद्धि, धनादि की हानि, पुत्रादिक शुभ, रोग चौरादि का भय, जल, मान, घनघान्न, वन्धन भय, शारीरिक कष्ट, वस्त्र विग्रह, स्वान हानि, विजय की प्राप्ति, वर्षफल उत्तराशी की प्रेरणा पूर्वाभास शोथ कारक है इसमें शनि और केतु विशेष हानि कारक है इसलिये इन दोनों की शान्ति करानी चाहिये ॥

बृश्चि—घनघान्नादि की हानि, घर्मादि-रम्भ, कार्य सिद्धि, मानसिक चिन्ता, जल, रोगादि का भय, मन्त्रादी-प्राप्ति, शुभ की प्राप्ति पारिवारिक कष्ट ता० २ जन्मवरी भय ई० तक तुल्य राशिवालों के लिए शनि की वाइ माली रहने के कारण भयैक तरह की हानि होगी अतः इसमें महाबीजों की पुत्रा शनि पुत्रन शनि स्त्रीक पाठ प्रति रविवार को योगन वृक्षमें जलदान तथा जनिवार को मोढ़े की प्रशुद्ध चरण करना कल्याण कारक होगा वर्षफल महत्त्व मोढ़े का शोथ कारक है ॥

धनु—विदेश भ्रमण, वस्त्र भय, स्वान-मान की हानि, पुत्र शोथ, जल वृद्धि, घन्नादि की विशेष हानि मानसिक चिन्ता, रोगचौरादि का भय, देह कष्ट, जन्म राशिवालों का भी शनि के वाइ माली रहने के कारण अधिक हानि होगी, अतः इसकी शान्ति पूर्ण बुध्ति राशि के अनुसार करें इसमें शनि राहु और केतु से तीनों पह विशेष हानिकारक है अतः इन तीनों का भी शान्ति करनी चाहिये वर्षफल विवेककारक है ॥

मकर—ता० ३ जनवरी ८८ ई० में मकर राशिकाली की जनि की सार्द्ध साती रहने के कारण विशेष जनि होगी। वैदु सोम, धन पुत्रादि की प्राप्ति, बन्धन तथा राजा भव, योग-बोरादि का भव, विजय की प्राप्ति, स्थान मान की प्राप्ति, इत्यादि विशेष है। नकारक मध्यम शत्रु का बर्तकल लाभदायक होगा, इसमें मंगल बुध जनि धीरे केतु से बारी यह प्रवर्तनीय है। धन बारी की शान्ति तथा जनि सार्द्ध साती की शान्ति कल्याण प्रद होगा ॥

कुम्भ—धनप्राप्ति का साथ, कार्यों की सिद्धि, बन्धन राज भव, इच्छा जनि, मानसिक चिन्ता, पुत्र प्राप्ति, शत्रुनाश, धाम की वृद्धि, मान-सिद्धि, तिर्थ यात्रा, पारिवारिक मोक्ष, बर्तकल त भ-कारक है इसमें मंगल राहु धीरे केतु से तीनों विशेष जनिकारक है धन: इन तीनों की शान्ति श्रेयस्कृत होगा ॥

मीन—धन पुत्रादि का साथ, योग-बोरादि का भव, शारीरिक कष्ट, मानसिक चिन्ता, कार्यों की सिद्धि, विजय की प्राप्ति, धर्मस्थान मान की प्राप्ति, विदेश-प्रमथ, इसमें जनि राहु धीरे केतु से तीनों यह विशेष कष्टकारक तथा जनिकारक है धन: इन तीनों यहाँ की शान्ति शुभफल दायिका होगी ॥

सन् १३९५ साल में उपनयनक दिन

| | | | | | | | |
|-----------|-----|----|-------|----------------|-----|----|-------|
| माघ | सु० | ११ | शुक्र | रोहिणी नक्षत्र | ता० | २६ | जनवरी |
| फाल्गुन | कु० | ५ | सोम | हस्त-चित्रा | ता० | ८ | फरवरी |
| " | सु० | ५ | सोम | मघिनी | ता० | २३ | " |
| " | " | ११ | रवि | पुनर्वसु | ता० | २८ | " |
| चैत्र | " | १० | रवि | " | ता० | २७ | मार्च |
| " | " | ११ | सोम | पुष्य | ता० | २८ | " |
| दि. वैश्व | " | ५ | रवि | श्रवणा | ता० | १६ | जून |
| " | " | १० | शुक्र | चित्रा | ता० | २४ | जून |
| आषाढ़ | कु० | ५ | सोम | ज्येष्ठा | ता० | ४ | जुलाई |

सन् १३९५ साल में विवाहक दिन

| | | | | | | | |
|---------------|-----|----------|----------|----------------|-----|----|---------|
| मार्ग | कु० | १२ | बुध | चित्रा नक्षत्र | ता० | १८ | नवम्बर |
| " | " | १३ | बृहस्पति | चित्रा | ता० | १९ | " |
| " | सु० | १ | रवि | धनुराषा | ता० | २२ | " |
| " | " | २ | सोम | मूल | ता० | २३ | " |
| " | " | ५ | बुध | उ.भा. | ता० | २५ | " |
| " | " | ६ | बृहस्पति | श्रवणा | ता० | २६ | " |
| " | " | ७ | शुक्र | घनिष्ठा | ता० | २७ | " |
| " | " | १०-११ | सोम | उ.भा. | ता० | ३० | " |
| " | " | १२ | बुध | मघिनी | ता० | २ | दिसम्बर |
| पौष | कु० | १-२ | रवि | मृगशिरा | ता० | ६ | " |
| " | " | ६ | शुक्र | मघा | ता० | ११ | " |
| माघ | " | १३ | रवि | मूल | ता० | १७ | जनवरी |
| " | सु० | १ | बुध | श्र.घ. | ता० | २० | " |
| " | " | ६ | रवि | उ.भा. र. | ता० | २४ | " |
| " | " | ७ | सोम | रे. घ. | ता० | २५ | " |
| " | " | १० | बृहस्पति | रोहिणी | ता० | २८ | " |
| " | " | ११ | शुक्र | रो.मृ. | ता० | २९ | " |
| फाल्गुन | कु० | १ | बुध | मघा | ता० | ३ | फरवरी |
| " | " | २ | बृहस्पति | " | ता० | ४ | " |
| " | " | ४-५ | रवि | हस्त | ता० | ७ | " |
| " | " | ५ | सोम | ह.चि. | ता० | ८ | " |
| " | " | ७ | बुध | स्वाती | ता० | १० | " |
| " | " | १३ | सोम | उ.भा. | ता० | १५ | " |
| " | सु० | ४-५ | रवि | रेवती | ता० | २१ | " |
| " | " | ५ | सोम | मघिनी | ता० | २२ | " |
| " | " | ७-८ | बुध | क.री. | ता० | २४ | " |
| " | " | ८ | बृहस्पति | रोहिणी | ता० | २५ | " |
| " | " | ९-१० | शुक्र | मृगशिरा | ता० | २६ | " |
| " | " | १४-१५ | बुध | मघा | ता० | २ | मार्च |
| चैत्र | कु० | ३ | रवि | हस्त | ता० | ६ | " |
| " | " | ४-५ | सोम | चि. स्वा. | ता० | ७ | " |
| " | " | ६ | बुध | धनुराषा | ता० | ९ | " |
| " | " | ७ | बृहस्पति | " | ता० | १० | " |
| " | " | ८ | शुक्र | मूल | ता० | ११ | " |
| दि. वैश्व सु० | ५ | रवि | मघा | " | ता० | १६ | जून |
| " | " | ६ | सोम | " | ता० | २० | " |
| " | " | १० | शुक्र | चि. स्वा. | ता० | २४ | " |
| " | " | १२ | रवि | धनुराषा | ता० | २६ | " |
| " | " | १३ | सोम | " | ता० | २७ | " |
| " | " | १५ | बुध | मूल | ता० | २९ | " |
| आषाढ़ कु० | १ | बृहस्पति | उ. भा. | " | ता० | ३० | " |
| " | " | २ | शुक्र | " | ता० | १ | जुलाई |
| " | " | ७ | बुध | उ. भा. | ता० | ६ | " |
| " | " | १२ | रवि | रोहिणी | ता० | १० | " |
| " | " | १३ | सोम | रो. मृ. | ता० | ११ | " |

1932

सन् १३१५ साल में प्र.व. द्विरागमतक दिन

सन् १३९५ साल में विशेष पर्वक सूची

सन् १३९५ साल में गृहारम्भ गृहप्रवेशक दिन

अष्टम सन् १३६६ साल में गुरु सप्तम

प्रायश्च कृत्वा १ मीन ही प्रायश्च भुजक ३ योग तस्य, भाद्र पुन ६ मीन
 ही भाद्र पुन १२ शुक्र तस्य, प्रायश्च पुन १३ रवि ही मार्ग भुजक ६ बुध
 तस्य, योग पुन २० शनि ही माघ पुन १० बुध तस्य, भाद्राशु पुन १०
 बुध तस्य ही भाद्राशु पुन १० शनि तस्य बुध छति । मत्तः प्रायश्च वशे ज्ञेयस्य क
 दिन माघ कृत्वा पश मे छति । विष हक दिन मार्ग-शिव तथा माघ मे छति ॥

[illegible]

व. कला । इव—भुक्त पुरा भवत, कल परिचय, सपुत्र सम ।
 गौतम—वशादि श्रौ० १२ नी सां० १७ मक समुद्रना, यद-तल वृद्धिक योग,
 सा० १८ नी पशाल तल उल्लावा वात पकोप ।

पुंलिङ्गव्यक्तिः

[illegible][illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

नौद्व-—१।०१०।ता० १५।क।उष्ण।विशेष।आयु।क।प्रकोप।
ता० १५।ही।पक्षा।न।क।अनुकूलता।

बालमुद्राहारा (विशेष) चट्टी प्रतीति आदिनी पाया पोस । एहि मे काँचहार राजा १३ बीजाहार क पुत्र होइछ । पुत्र एव बीजा
 मुद्रास एवत शकती पावती मे कहने छी । ई एव विजयवा कहिछ । एहि एव मे दीर्घत आरु कक कछी, गोर दीर्घविजय एवत कहि छी ई एहिमे
 प्रयादत मे ए छिउत मे आरु केन बाउठ निग, विनामर, प्रीतिमान, नगा, विनामरी, प्रीतिमान, पातमरी, प्रयात, पोस मे वृद्धराजावारी । कन विर
 क

श्राव्य हेतु पुत्रवर्गो स्त्री लोकोक्ति के द्वैत पादप फलपत्र गीत । एहि ब्रतक
वर्कका ही वर्ग पर्यन्त निरत तुष्टि रहै छनि धार्मिक भण्डनवर्गी दिन

[illegible]

दुष्प्राप्त कलम्—वक्षुयाति माह वा निवत्वा महिम्ना
 हतना शुभ सौख्यं करा ॥ कान्तशरण—शुभाटक अछि प्रहः मन
 सिनी पूजा वक्षिनाहि मुखाद, विख्या दजानी मुखाटक अछि ॥

करा । मुरराजपुरी यदिहा विजया नरका ।
वृषभारक धडि । मरु नवमो व्रत, विजय-

[illegible]

† (मू. म. म. म. म. म.) दातादाता दातादाता ।

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

सौम्य—यथा हि श्री सा० १३ त्क यथा/योरित्यन्ता ता० १५ श्री यक्षान्ता त्क यमुपसृता

[illegible]

[illegible][illegible]

॥ ३७॥ अथ नामनानायाः कथायाः क्रमात्पठनम् । संपूर्णः फलमुत्पाद्य पश्चात् पठ्यमानान् श्राद्धादिव्रतकापालिं सध्वनितानामवश्यं पुत्रवत् । नैवार्कः । ह्येवमुन्मत्तान्मत्तान्ताडयन्तु ज्ञानां भवेन् । इह भूकृत्याय शान्तिर्भूना । एकराश्वम् ॥

[illegible]

प्राजापती विषय—शुक्र परिचय, काल वरिण ता० ४ र्थ बाधुद समाय ।
 गौतम—पञ्चादि र्थ ता० ८ अदि प्रतिपूज समाय, ता० ९ र्थ ता० १५ तक सीम समाय ।

शास्त्रिणं पदवर्धनविधिः—यैकुशा पर शास्त्रिणं पदसाधनमनुष्ठापयामास तं ॐ शास्त्रिणं वदाम नमः एहि मन्त्रं तीनवारं वाच्यते ॥
 नमः ॥ पदको विष्णु कृते, उपरान्ते वैकुण्ठा विष्णु नमः ॥ पदसाधनं भगवन् प्रसूतं प्रसूतकर्मणो यन्मनकं पापक्षयं पूर्णं
 पापक्षयः एहि मन्त्रं शास्त्रिणं पदकं दाम कृते ॥ एहि तर्काधिकारं प्राप्तं विष्णुसत्त्वात् मानव कर्तव्यमधिकं नलकीश्वरं प्रचलनं विधिः ॥

[illegible]

लोभम—ता० १६ स ता० २७ तक सोम्य समय, लण्ड बुद्धिक योग ।

ता० २८ ए० प्रतिफुल समय ।

ता० २८ टी प्रतिफल समय ।